कार्यस्थलों की बढ़ती असुरक्षा

भारत डोगरा

रोज़गार व कार्यस्थल पर होने वाली दुर्घटनाओं की चर्चा कम होती है, पर यह समस्या बहुत गंभीर रूप ले चुकी है। व्यावसायिक स्वास्थ्य व सुरक्षा के विश्वकोश ने अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के आंकड़ों के आधार पर बताया है कि विश्व में एक वर्ष में 12 करोड़ व्यावसायिक या रोज़गार से जुड़ी हुई दुर्घटनाएं होती हैं। इनमें से 2,10,000 दुर्घटनाएं जानलेवा साबित होती हैं। प्रतिदिन, औसतन ऐसे 500 व्यक्ति होते हैं जो रोज़गार के लिए अपने घर से जाते हैं पर कार्यस्थल पर दुर्घटना के कारण फिर कभी घर नहीं लौटते हैं।

व्यावसायिक दुर्घटनाओं में मौतों से अधिक गंभीर समस्या तरह-तरह की गंभीर चोट लगने की है। इस कारण बड़ी संख्या में प्रभावित व्यक्ति, विशेषकर मज़दूर तरह-तरह की अपंगता का शिकार भी होते हैं।

भारत में एक वर्ष में 2 करोड़ व्यावसायिक दुर्घटनाएं होती हैं। ये दुर्घटनाएं कृषि, बड़े व छोटे उद्योगों, विभिन्न निर्माण स्थलों, खदानों, वनों आदि विभिन्न कार्यस्थलों पर होती हैं। लेकिन बहुत कम दुर्घटनाएं ही संज्ञान में आती हैं या इनका कोई रिकॉर्ड रखा जाता है। इनसे प्रभावित होने वाले व्यक्तियों की बहुत कम क्षतिपूर्ति हो पाती है।

एक विशेषज्ञ डॉ. जोरमा सॉरी ने कई उदाहरण देते हुए बताया है कि यह ज़रूरी नहीं है कि आधुनिकता व मशीनीकरण के आगमन से सुरक्षा की स्थिति में सुधार हो। कई बार सुरक्षा पर प्रतिकूल असर भी पड़ सकता है। अतः तकनीकी में बदलाव के समय सुरक्षा का विशेष ध्यान रखना ज़रूरी है। सुरक्षा उपकरणों के बारे में डॉ. सॉरी ने बताया है कि ये उपयोगी तो हैं, पर इनके उपयोग के साथ यदि उपयोग करने वाले सुरक्षा के प्रति लापरवाह हो जाएं तो स्थिति बिगड़ सकती है।

डॉ. रोनाल्ड स्किब ने बताया है कि प्रायः सभी दुर्घटनाओं के कई मिले-जुले कारण होते हैं पर इनमें मानवीय गलतियों की मुख्य भूमिका होती है।

गार्डन एम. स्मिथ और मार्क वीजलराइट ने कार्यस्थल दुर्घटनाओं को कम करने में *जन स्वास्थ्य नज़रिए* की पैरवी की है। उन्होंने बताया है कि सामान्यतः दुर्घटनाओं को कम करने के प्रयास एक कंपनी या एक इकाई में केंद्रित होते हैं। पर यदि जन स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से देखा जाए जो किसी स्थान के सभी उद्योगों व वहां की आबादी को समग्र रूप से देखते हुए पूरे क्षेत्र का नियोजन सुरक्षा की दृष्टि से करना चाहिए। जहां खतरनाक स्थिति का बुरा असर उद्योग में काम करने वाले लोगों पर पड़ता है, वहीं आसपास रहने वाले लोगों को भी इससे जुड़े खतरे सहने पड़ते हैं, जैसे भोपाल गैस त्रासदी।

इस क्षेत्र में हुए अनुसंधानों से दुर्घटनाओं की संभावना को कम करने के व उनसे होने वाली मौत की संभावना को कम करने के कई उपाय उपलब्ध हुए हैं। स्वीडन, फिनलैंड, जापान व जर्मनी ने जानलेवा साबित होने वाली कार्यस्थल की दुर्घटनाओं को कम करने में सफलता प्राप्त की है। ये देश कार्यस्थल की जानलेवा दुर्घटनाओं में 30 से 40 वर्षों में लगभग 60 से 70 प्रतिशत की कमी कर सके हैं।

यह उपलब्धि महत्वपूर्ण तो है, पर यदि विश्व स्तर पर देखें तो अभी यह उपलब्धि बहुत कम क्षेत्रों तक सीमित है। ज़्यादा क्षेत्र ऐसे हैं जहां स्थिति अभी भी बहुत चिंताजनक बनी हुई है। कार्यस्थल की दुर्घटनाओं को कम करने के लिए अभी बहुत प्रयास बाकी हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***